अध्याय प्रथम– शोध का परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 शोध की आवश्यकता

1.3 शोध का औचित्य

1.4 समस्या कथन

1.5 शोध के उद्देश्य

1.6 शोध की परिकल्पना

1.7 शोध मे प्रयुक्त चरों की परिभाषा

1.8 शोध की सीमाएं

अध्याय प्रथम– शोध का परिचय

शोध कथन

"विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध"– एक अध्ययन

1.1 प्रस्तावना :–

समायोजन व्यक्ति के द्वारा कि जाने वाली वह सचेतन क्रिया है, जिसमें वह अपनी आवश्यकताओं कि पूर्ति एवं परिस्थितियों में संतुलन स्थापित करता है। तभी वह अपना कार्य व्यवहार उचित ढ़ंग से करने में समर्थ होता है। समायोजन के द्वारा हम अपने आप को बदलती परिस्थितियों के अनुसार बदलने का प्रयत्न करते हैं, तो दूसरी ओर समायोजन हमें ऐसे शक्ति और सार्थकता भी देता है कि हम परिस्थितियों को ही बदल सकें। समायोजन हमें हमारे और हमारी परिस्थितियों के बीच बनाना होता है। अतः उसके लिए अपने आप को बदल कर संतुलन बनाया जा सकता है। अर्थात् हालातों से समझौता किया जा सकता है। व्यक्ति कि एक दशा, मनोदशा को ही प्रकट करती है।इस मनोदशा पर अनुकूल एवं प्रतिकूल प्रभाव उसकी अपनी संतुष्टी का ही पड़ता है और वह कितना संतुष्ट है, इसकी कुंजी उसकी इच्छा और आवश्यकताओं की संतुलित तथा इस संतुष्टी से जुडी उसकी उम्मीदो पर आधारित होती है। एक बालक तभी संतुष्ट होता है, जब वह अपने आप को समायोजित अनुभव करता है।

1.2 सामाजिक समायोजन–

व्यक्ति को अपने आप से संतुष्ट तथा समायोजित होने कि आवश्यकता होती है, उतना ही अपने सामाजिक परिवेश से जुडी बातों तथा व्यक्ति के साथ उचित ताल–मेल बनाये रखकर समायोजित रहने की होती है। उसे अपने परिवेश में तथा उसमें उपलब्ध परिस्थितियों में भी संतुष्ट अनुभव करना चाहिए। तभी वह ठीक तरह से समायोजित रह सकता है। सामाजिक परिवेश का दायरा उसके घर परिवार से शुरु होकर विद्यालय को छूता है। एक बालक पूर्णतः

सामाजिक समायोजन तब प्राप्त करता है, जब वह घर, परिवार, मित्र, संबंधी, पड़ोस, समुदाय एवं विद्यालय में समायोजित हो तो वह बालक पूर्णतः सामाजिक समायोजित हो सकता है। घर परिवार से लेकर मित्र सगे संबंधियों-पड़ोसियों, समुदाय, समाज एवं विद्यालय में रहने वाले सहपाठियों तथा सम्पूर्ण सामाजिक परिवेश से समायोजित होने के लिए व्यक्ति को किस प्रकार प्रयत्न करने चाहिए। इस दिशा में पहली बात तो यह है कि उसे समाजिकता का पाठ सही ढ़ंग से पढ़ना चाहिए तथा उसे सच्चाई से व्यवहार में लाना चाहिए। उसमें सभी सामाजिक गुणों का समावेश होना चाहिए तथा अधिकार के स्थान पर कर्तव्यों के पालन कि अधिक इच्छा होनी चाहिए। समाज के नियम, उसकी आचार संहिता, समाज तथा विशेषकर अपने समुदाय कि विशेष अभिवृत्तियों, संस्कारों तथा रीति-रिवाजों से परिचित होना चाहिए तथा उनका एक उचित सीमा तक पर्याप्त सम्मान करना चाहिए। ऐसी अवस्था में ही उसे अपने सामाजिक परिवेश में ठीक प्रकार समायोजित होने में उचित सहायता मिल सकती है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, वह अपनी आवश्यकताओं के लिए एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। व्यक्ति कि उपलब्धि के रुप में समायोजन का तात्पर्य यह है कि एक व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में कितनी दक्षता के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करता है। जब हम समायोजन को एक उपलिब्ध मानते हैं तो हम समायोजन की गुणवत्ता के मूल्यांकन के लिए कुछ मापदण्ड निर्धारित करते हैं। प्रक्रिया के रुप में समायोजन अध्यापकों के लिए महत्वपूर्ण होता है। विद्यार्थियों का समायोजन व्यापक रुप से जिस वातावरण में वह रहते हैं, उससे प्रभावित होता है। वह सदैव इसके अनुकूल समायोजन का प्रयत्न करते है।एक व्यक्ति जो अपने मूल्यों तथा आचरणों के मानकों को बिना किसी परिवर्तन के धारण करता है तथा समाज में पर्याप्त परिवर्तन होने पर भी उन्हें जारी रखता है, उन्हें समावेशक कहते हैं। वह व्यक्ति जो अपने मानको को सामाजिक संदर्भो से ग्रहण करता है और अपने विश्वासों को समाज के परिवर्तन मूल्यों के साथ बदलता रहता है, उसे समंजक कहते हैं। समाज में सफलतापूर्वक समायोजित होने के लिए एक व्यक्ति को दोनों युक्तियों-समावेषण समंजन का सहारा लेना होता है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब सामाजिक मनोविज्ञान कि आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती है। जिसके फलस्वरुप उसका कुसमायोजित व्यवहार होता है। जब इन आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है, तो जीव में संतुलन की एक अस्थायी स्थिति हो जाती है और लक्ष्य की ओर क्रियाशीलता समाप्त हो

जाती है। इस प्रकार समायोजन एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी जैविक मनोवैज्ञानिक तथा समाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। उचित व्यवहार अनुक्रियाओं द्वारा बाह्य अपेक्षा तथा स्वयं कि आंतरिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करता है। विद्यालय में समायोजन शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य है कि विद्यार्थियों के उनके सामाजिक जीवन में सफल होने का प्रशिक्षण देना। जीवन के स्वभाविक उद्देश्यों के अनुसार छात्रों के व्यक्तित्व का निर्माण एवं परिस्कार करने में अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

1.3 **सामाजिक समायोजन के क्षेत्र–**

अ– व्यक्तिगत समायोजन

1 शारीरिक विकास और स्वास्थ्य संबंधी समायोजन

2 मानसिक विकास और स्वास्थ्य समायोजन

3 संवेगात्मक समायोजन

4 लैंगिक समायोजन

5 व्यक्तिगत आवश्यकताओं से संबंधित समायोजन

ब– सामाजिक समायोजन

1 घर परिवार से समायोजन

2 मित्र और संबंधियों से समायोजन

3 पड़ोसियों तथा समुदाय के अन्य सदस्यों से समायोजन

स- व्यवसायिक समायोजन

1 कार्य स्थान में समायोजन

2 कार्य वातावरण में समायोजन

1.4 सु-समायोजित व्यक्ति की विशेषताएँ

1. चिंतन में परिपक्वता।
2. भावात्मक संतुलन
3. दूसरो के प्रति संवेदन समझ।
4. दैनिक घटनाओं के द्वारा जनित तनाव से मुक्ति ।
5. स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम।
6. स्पष्ट उद्देश्य ।
7. समाजिकता की भावना।
8. उत्तरदायित्व की भावना।
9. औरो को कष्ट नहीं पहुचाना।

1.5 शोध का महत्व एवं आवश्यकता-

शोधार्थीको जानने कि यह जिज्ञासा है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में बालको के सामाजिक समायोजन से उनकी शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करती है। विद्यार्थी विद्यालय में पाठ्यक्रम एवं विद्यालय गतिविधियों सहपाठियों के साथ किस प्रकार समायोजित होते है। जिससे कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है या कम होती है। अनेक बालक विद्यालय में समायोजित नहीं हो पाते, इससे उन विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह जानने का प्रयास इस शोध अध्ययन में किया गया है।

1.6 शोध का औचित्य-

प्रस्तुत पूर्व में किये गये शोधों में सामाजिक समायोजन से संबंधित शोध कम मात्रा में प्राप्त होने के कारण शोधार्थीको सामाजिक समायोजन से संबंधित शोध करने कि जिज्ञासा है। शोधार्थीको आशा है कि इस शोध द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त हुऐ,उससे विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के प्रभाव को देखा जा सकेगा। यह जानकर हमें आने वाले समय में सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि को जानने में मदद मिलेगी।इस शोध सर्वेक्षण के बाद प्रशासन को यह जानकारी प्राप्त होगी कि विद्यालय में किस प्रकार कि क्रियाएँ होने से विधार्थियों में सामाजिक समायोजन अधिक होकर शैक्षिक उपलब्धि को अधिक प्राप्त किया जा सक ता है।शिक्षकों को बालको के व्यवहार एवं सामाजिक समायोजन द्वारा किस प्रकार कि शिक्षा दे सकते है। यह जानकारी प्राप्त हो सकती है।इस शोध द्वारा विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु काम आने वाली जानकारियाँ प्राप्त हो सकती है।

1.7 प्रस्तुत शोध का प्रारम्भ निम्नलिखित कथन से होता है:-

"विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध"- एक अध्ययन

1.8 शोध के उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्य बनाये गये हैं, जिससे शोध में प्रयुक्त चरों को प्रत्येक की औसत ज्ञात करके देखाजिससे सभी चरों के मध्य संबंध एवं अंतर को ज्ञात किया जा सका है। इससे विशेष जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिली है:-

1 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।

2 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि लिंग अनुसार ज्ञात करना।

3 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि प्रबंधन अनुसार ज्ञात करना।

4 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि प्रशासन अनुसार ज्ञात करना।

5 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि माध्यम अनुसार ज्ञात करना।

6 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन ज्ञात करना।

7 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन लिंग अनुसार ज्ञात करना।

8 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन प्रबंधन अनुसार ज्ञात करना।

9 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन प्रशासन अनुसार ज्ञात करना।

10 विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन माध्यम अनुसार ज्ञात करना।

11 विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध ज्ञात करना।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल Regional Institute of Education, Bhopal पुस्तकालय Library

1.9 शोध की परिकल्पना

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया है क्योंकि शोध में प्रयुक्त चर सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में कोई सही दिशा प्राप्त न होने के कारण शोधार्थी ने अपने अनुभव एवं ज्ञान के अनुसार शून्य परिकल्पना का निर्माण किया है।जो निम्नलिखित है:-

अ- शोध की परिकल्पनाएँ

1अ छात्र की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

2अ छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

3अ शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

4अ अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

5अ सी.बी.एस.ई. विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

6अ म.प्र. बोर्ड विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

7अ हिन्दी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

8अ अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

9अ विद्यार्थियों कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

ब- शोध की उप.परिकल्पनाएँ

1.ब- छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

2.ब- छात्र-छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

3.ब- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

4.ब- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक समोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

5.ब- केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

6.ब- केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, दिल्ली एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

7.ब– हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

8.ब– हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

स– परिकल्पना के प्रकार

(1) **सकारात्मक परिकल्पना**–जिसमें दो चरों के संबंध को सकारात्मक रूप में दर्शाता है।

(2) **नकारात्मक परिकल्पना**– जिसमें दो चरों के संबंध को नकारात्मक रूप में दर्शाता है।

(3) **शून्य परिकल्पना**–जिसमें समस्या में दो चरों के बीच के संबंध को अंतर रहित रूप में दर्शाया जाता है।

उदा.– उच्च आर्थिक परिवारों से आने वाले छात्रों और निम्न परिवारों से आने वाले छात्रों के परिश्रम करने की वृत्ति में कोई अंतर नहीं होता।

द– परिकल्पना परीक्षण

प्रस्तुत शोध में परिकल्पना परीक्षण हेतु रूपरेखा के अनुसार प्रमुख चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के मध्य संबंध एवं अंतर को देखने के लिए r सार्थकता तालिका में .01 एवं .05 स्तर पर जाँचकर परिकल्पना की स्वीकृति एवं अस्वीकृति दी है। अंतर की परिकल्पना परीक्षण जाँचने के लिए सारणी t के मान .01 एवं .05 स्तर पर देखकर परिकल्पना का परीक्षण किया है।

1.10 चरों कि परिभाषाएँ

अ सामाजिक समायोजन

1 **वोनहेलर :–** हम समायोजन शब्द को अपने आप को मनोवैज्ञानिक रुप से जीवित रखने के लिए वैसे ही प्रयोग में ला सकते हैं जैसे कि जीवशास्त्री अनुकुल (ADAPTION) शब्द का प्रयोग किसी जीव को शारीरिक एवं भौतिक रुप से जीवित रखने के लिए करते है।

2 **गेट्स जरिशिल और अन्य :–** समायोजन एक ऐसी सत्त प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच मधुर संबंध स्थापित करने में मदद मिल सके।

ब शैक्षिक उपलब्धि

1 **सुपर :–** एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयोग करता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा कोई कार्य कितनी भलिभाँति कर लेता है।

2 **ईबेल :–** शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्पना है, जो विद्यार्थियों द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलता या क्षमता का मापन करता है।

स सक्रियात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने शोधानुसार कुछ परिभाषाओं का निर्माण किया है, जो इस प्रकार है।

1 **शैक्षिक उपलब्धिः–**''शैक्षिक उपलब्धि से आशय है कि छात्रों को जो कुछ पढ़ाया व सिखाया गया है, उसमें से उन्होंने कितना सीखा है। यह ज्ञात करना शैक्षिक उपलब्धि है''।

2 **सामाजिक समायोजनः–**''विद्यार्थीयों का विद्यालय में एक दूसरे के साथ समायोजन एवं हर प्रकार से मिलकर रहना एवं अपनी बात को सभी विद्यार्थीयों के साथ व्यक्त करना'' जिससे उनको अकेलेपन की अनुभूति न हो यह इस शोध के अनुसार सामाजिक समायोजन है।

1.11 शोध की सीमाएँ

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अनेकों सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक होते हैं परन्तु इस शोध हेतु सामाजिक समायोजन के साथ शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करने के लिए लिया गया है। अन्य कारक जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते है। उन्हें हमने इस शोध में शामिल नहीं किया। इसलिए इस शोध की मुख्य सीमाओं का निर्धारण केवल निम्न आधार पर किया गया है।

प्रस्तुत शोध की सीमाओं का निर्धारण किया गया है, जो निम्नलिखित हैः-

1. प्रस्तुतशोध मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के क्षेत्र में निहित है।
2. प्रस्तुत शोध कक्षा 11 वीं के **गणित संकाय** के विद्यार्थियों पर किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों कि आयु 16 से 18 वर्ष के बीच है।
4. प्रस्तुत शोध में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है।
5. प्रस्तुत शोध में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों का चयन किया गया है।
6. प्रस्तुत शोध मेंहिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों का चयन किया गया है।
7. प्रस्तुत शोध में सी.बी.एस.ई. विद्यालयएवं म.प्र. बोर्ड विद्यालय के विद्यार्थियों को चयन किया गया है।
8. प्रस्तुत शोध कक्षा 11 वीं के **गणित संकाय** के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन को लिया गया है।